ISSN: 2583-0511 (Online)

गाय एवं भैंसों में मद/गर्मी से सम्बंधित प्रजनन समस्या एवं निवारण

डॉ. विकास सचान, डॉ. संजय मिश्रा एवं डॉ. अवनीश कुमार सिंह

मादा पशु रोग एवं प्रसूति विज्ञान विभाग, दुवासू, मथुरा

हमारे देश में किसानो की आजीविका एवं आय में कृषि तथा पशुपालन का अहम् योगदान है। हमारे देश में 20वीं पशु गणना के अनुसार वयस्क मादा भैंसों एवं गायों की संख्या 55 मिलियन एवं 81.04 मिलियन क्रमशः है। अधिकाँश गाय तथा भैसों में कुछ प्रजनन समस्याएं होती है जिसके कारण दुग्ध उत्पादन में कमी फलस्वरूप पशुपालकों को आर्थिक क्षति का सामन करना पड़ता है। मुख्य प्रजनन समस्याओं में पशु का मदकाल में ना आना और सुप्त अथवा चुप्प मद का होना एवं पशु का बार फिर जाना या गर्भित ना होना प्रमुख है। इस लेख में हम मद चक्र से सम्बंधित कुछ प्रमुख परेशानियां एवं उनके प्रबंधन के बारे में जानेगे।

➢ अधिकांशतः भारत में गाय भैंसे तीन साल की उम्र तक मद में नहीं आती है। साथ ही साथ ग्रीष्म ऋतू में भैंस एवं सर्दी ऋतू में गाय गर्मी/मद में नियमित रूप से अच्छे लक्षणों के साथ नहीं आती है।

➢असंतुलित एवं पोषक तत्वों की कमी वाला आहार, बच्चेदानी में संक्रमण, अनियमित अंडाशय की कार्यिकी एवं अत्यधिक गर्म या सर्द वातावरण इत्यादि पशु के मदकाल में ना आने के कुछ प्रमुख कारण होते है। इस समस्या से निजात पाने के लिए कुछ वैज्ञानिक तथ्यों की जानकारी के साथ उचित प्रबंधन करना अतिआवश्यक है।

➢नियमित मद्चक्र एवं प्रजनन के लिए उचित मात्र में दिए गए संतुलित आहार का प्रमुख योगदान है। आहार में सूखे एवं हरे चारे के साथ दाने का उचित मात्र में मिश्रण करना नितांत आवश्यक होता है। संतुलित आहार में नमक एवं खनिज लवणों का मिश्रण अतिलाभकारी होता है। इससे पशु को उचित मात्र में कार्बोहायड्रेट, प्रोटीन, वसा, मिनरल और विटामिन की पूर्ती होती है जोकि प्रजनन प्रबंधन के अतिअवाश्यक होता है।

➢पशु को प्रतिदिन 50 ग्राम की दर से खनिज लवणों का मिश्रण देना चाहिए। साफ़ एवं भरपूर मात्र में पीने के पानी की उपलब्धता सुनिश्चित होनी चाहिए. पशुचिकित्सक की सलाह से हर तीन से चार महीने में कृमिनाशक दवाओं का उपयोग करना चाहिए।

➢ग्रीष्म ऋतू में भैंसों का रख रखाव कम गर्म अथवा छायादार स्थानों में करना तथा पशु को दिन में कम से कम एक बार अथवा दो बार नहलाना उचित होता है। वह्यपरिजीवियों से निजात पाने के लिए पशु के रहने के स्थानों में नियमित रूप से परिजीविनाशक दवाओं का छिडकाव करते रहना चाहिए।

➢अंडाशय के ऊपर पीतपिण्ड का स्थायी रूप से बने रहना तथा गर्भाशय के संक्रमण की अवस्था में भी पशु नियमित रूप से गर्मी में नहीं आता है। इस अवस्था में पंजीकृत पशुचिकित्सक से संपर्क करके उचित सलाह एवं इलाज़ करवाना चाहिए।

ISSN: 2583-0511 (Online)

➢कुछ पशु अनुवांशिक कमियों के कारण भी मदचाक्र में नहीं आते। ऐसे पशुओं की, जो तीन या चार साल के बाद भी मद/गर्मी नहीं दिखाते, पशुचिकित्सक से जांच कवानी चाहिए।

➢कई बार यह भी देखा गया है कि मद के सही लक्षणों (योनी द्वार से साफ़ स्राव का आना, पशु का दुसरे पशुओं को अपने ऊपर चढ़ने देना, बार रम्भाना, बार पेशाब करना, थानों में बार बार दूध का उतरना, अत्यधिक चहलकदमी करना इत्यादि) की जानकारी ना होने के कारण भी पशुपालक मद/गर्मी को नहीं पहचान पता है और पशु के मद में होने पर भी गर्भाधान नहीं हो पाता।

➢कुछ भैसे मद में होते हुए भी स्पस्ट रूप से लक्षणों को प्रदर्शित नहीं करती है। इस अवस्था सुप्त मद/गर्मी कहा जाता है. इस दशा में अंडाशय की कार्यिकी एवं अंडक्षरण (अंडे का निकलना) बिलकुल सामान्य तरीके से होता है परन्तु मद के लक्षण ना या बहुत कम दिखने के कारण पशु को गर्भित नहीं करवाया जा सकता है। ऐसे पशुओं में मद के लक्षणों की पर्याप्त अभिव्यक्ति के लिए संतुलित आहार जो कि खनिज लवणों से भरपूर हो का अहम् योगदान होता है।

➢पशुपालक को मद के लक्षणों की पहचान होना बहुत ही आवश्यक है। ग्रीष्म ऋतू में नहलाने या पानी के छिडकाव से भी काफी मदद मिलती है। ऐसे पशुओं के पास नर पशु रखने से मद काल की अभिव्यक्ति में संतोषजनक सुधार लाया जा सकता है एवं साथ ही साथ यह नर पशु मादा के मद/गर्मी में आने पर उसे आसानी से पहचान सकता है।

➢उचित प्रबंधन के बाद भी यदि मद के लक्षण उभर कर नहीं आते तो पशुचिकित्सक से संपर्क करके एवं कुछ हार्मोन्स के उपयोग से भी मद/गर्मी को नियंत्रित एवं तथानुसार गर्भाधान कराया जा सकता है।

उपर्युक्त सुझाये गए वैज्ञानिक प्रबंधन एवं पशुचिकित्सकीय सलाह की मदद से पशुओं में मद/गर्मी से सम्बंधित होने वाली प्रजनन समस्यायों का सफल प्रबंधन एवं निराकरण किया जा सकता है जिससे पशुपालको को उनकी आय एवं जीविका को उन्नत करने में निश्चित ही मदद मिलेगी।